नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

मो. 7897475917, 9794299451

Website : www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

स्थापित 2005 ई.

पत्रांक................................ दिनांक : 13.08.2022

प्रकाशनार्थ

भारत का विभाजन भारतीय इतिहास की वह घटना है, जिसकी पीड़ा आज भी भारत के जनमानस को उसी तीव्रता से व्यथित किए हुए हैं, जिस भयावहता के साथ यह घटना घटी थी। 14 अगस्त, 1947 की जो स्याह रात भारतीय इतिहास की सबसे क्रूर और अंधेरी रात थी। इसी रात को वो भारत, जो हिन्दुकुश से आसमुद्रपर्यन्त एक राष्ट्र के रूप में जाना जाता था, दो अलग–अलग देशों में विभाजित हो गया। विभाजन की वह त्रासदी भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी है। उक्त बातें आजादी का अमृत महोत्सव के अन्तर्गत भारत विभाजन की पूर्व संध्या के अवसर पर अखण्ड भारत–खण्डित क्यों? विषय पर आयोजित व्याख्यान दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं आचार्य प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने कहीं। विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने आगे कहा कि भारतीय संस्कृति प्रारम्भ से ही समावेशी प्रकृति की रही है। समय समय पर भारत पर अनेक विदेशी आक्रांताओं ने विविध उद्देश्यों से आक्रमण किया। समय समय पर भारत की संस्कृति संक्रमणीय अवस्थाओं से होकर गुजरी परन्तु अपनी जिजीविषा के चलते भारत सांस्कृतिक रूप से दृढ़ रहा। 1857 ई. के बाद से भारत में सांप्रदायिकों ने सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर जोर पकड़ना प्रारम्भ किया। 1930 ई. के बाद भारत सांप्रदायिकता का अखाड़ा बन चुका था। अंग्रजों की कुटिल नीति और भारत के शीर्ष राजनैतिक नेतृत्व की अक्षमता एवं कुछ लोगों की सत्तालोलुपता से अंततः देश 14 अगस्त, 1947 ई. को भारी हिंसा, अराजकता एवं अव्यवस्था के साथ खंडित हो गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेंजर जन. (रिटा.) डॉ. अतुल कुमार वाजपेयी ने कहा कि देश विभाजन यद्यपि कि भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी है, तथापि विभाजन के बाद भारत उत्तरोत्तर विकास के पथ पर बढ़ता रहा है। विकास की गति स्वतंत्रता के लगभग 70 वर्षों तक बहुत धीमी रही है, तथापि पिछले कुछ वर्षों में यह तीव्र हुई। इसका सबसे बड़ा कारण भारत का सशक्त शीर्ष नेतृत्व है। आज भारत राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं प्रशासनिक दृष्किोण से सबल हो रहा है। पिछले 78 वर्षों में भारत विश्व की प्रमुख महाशक्ति बनकर उभरा है। आज भारत पुनः विश्वसिरमौर बनने की ओर अग्रसर है। आज कई ऐसे वैश्विक मुद्दे हैं, जिनकी अगुवाई भारत कर रहा है। आज जरूरत है कि हम अतीत की घटनाओं से सीख लेकर भारत निर्माण में अपना योगदान

सुनिश्चित करें। कार्यक्रम का संचालन इतिहास विभाग के अध्यक्ष श्री अभिषेक त्रिपाठी ने एवं संयोजन तथा कार्यक्रम की प्रस्ताविकी बी.एड्. विभाग की सहायक आचार्य डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर महाविद्यालय के समस्त शिक्षक, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

इसी क्रम में महाविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग द्वारा आज दिनांक 13 अगस्त, 2022 को विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें विशिष्ट वक्ता डॉ. संतोष सिंह, सहायक आचार्य रसायन विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदाबाद, प्रयागराज ने ''रिएक्शन मैकेनिज्म'' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. राम सहाय ने तथा रसायन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. शिव कुमार बर्नवाल ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह् प्रदान कर सम्मानित एवं आभार ज्ञापन किया।

(डॉ. सुधा शुक्ल)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी